Special GUEST

।। शिल्पकार ।।

रूपा मोहे
अध्यापिका

एक अच्छा शिल्पकार किसी भी प्रकार के पत्थर को तराशकर उसे सुंदर आकृति देकर उसे मूर्तिरूप देकर अपनी अहम भूमिका अदा करता है। अपनी लगन, मेहनत और परिश्रम से तराशी गई मूर्ति को देखकर उसे अनंत आनंद की प्राप्ति होती है। उसी तरह शिक्षक अपने विद्यार्थियों का सर्वांगिण विकास कर उसे 'विश्व का प्रकाश' बनाता है जो सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित कर सके। वह अच्छे शिल्पकार की तरह अपना दायित्व, अपना कर्त्तव्य निभाते हुए विद्यार्थियों को केवल पुस्तकीय ज्ञान ही प्रदान नहीं करता बल्कि उसके संपूर्ण विकास हेतु कई आयामों का सृजन भी करता है। शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुरमाली होने के नाते अपने विद्यार्थियों के संस्कारों की जड़ों को खाद देता है और अपने परिश्रम से सिंचकर उन्हें शक्ति में निर्मित करता है। वह सामाजिक विकास का सूत्रधार होता है। समाज की अभिलाषा, आकांक्षा, आवश्यकता, अपेक्षा और आदर्शों को सफल बनाने का कार्य करता है।

वह भविष्य निर्माता होने के साथ ही अपने विद्यार्थियों को जीने की कला सिखाता है। उनकी पूर्णता का विकास करने के लिए ज्ञान का पट खोलता है इसके लिए उन्हें नीतिज्ञान की शिक्षा देता है। वर्तमान समय में विद्यार्थी बहुत ही सजग, कुशल एवं न्चकंजमक होने के साथ–साथ अधैर्य भी होते जा रहे हैं परन्तु शिक्षक आज के इन्हीं विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन कर उन्हें भावी देश के कर्णधार, जिम्मेदार नागरिकों में परिणित करता है। हमारा उद्देश्य अपने विद्यार्थियों को अच्छे अंक प्राप्त कर सफल बनाना ही नहीं अपितु उनमें सार्वभौमिक भाईचारे की भावना का संचार करना भी है। उनके व्यक्तित्व को समृद्ध कराना ही हमारा उद्देश्य है। उनके लिए शिल्पकार की भूमिका निभाना ही हमारा दायित्व है।

वर्तमान समय में विद्यार्थी बहुत ही सजग कुशल एवं अपडेट होने के साथ ही अधैय भी होते जा रहे हैं परन्तु शिक्षक आज के इन्हीं विद्यार्थियों का उचित मागदर्शन कर उन्हें भावी देश के कर्णधार जिम्मेदार नागरिक में परिणित करता है। हमारा उद्देश्य अपने को अच्छे अंक प्राप्त कर सफल बनाना ही नहीं अपितु उनमें सार्वभौमिक भाईचारे की भावना का संचार करना भी है। शिक्षक आज के इन्हीं विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन कर उन्हें

परेशानियॉ पस्त करें जब उन्हें
हिम्मत जब वे हारते हैं।
धूमिल सी हो परिस्थितियॉ
हालात जब उन्हें भटकाते हैं
नई राह दिखाकर हम उनके
सभी संशय मिटाते हैं।

सूरज दादा

सूरज दादा हमें बताओ,
रोज कहाँ से आते हो?

किरणों वाला जल सुनहरा,
आते ही बिखराते हो।

सूरज बोला – बड़ा सफर है,
दूर गगन में मेरा घर है।

रोज सवेरे उठकर आता,
धरती पर उजियारा लाता।

फैले मखमल सी हरियाली,
हर घर आंगन में खुशहाली।

अच्छा जरा बजाओ ताली,
ताली तड़तड बजने वाली।

नाम – आकृति यादव
कक्षा – ७वीं 'अ'

कोशिश करने वालो की हार नहीं होती

कोशिश करने वालो की हार नहीं होती,
लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती।

नन्हीं चीटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।

मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना ना अखरता है। आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती। असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो, क्या कमी रह गयी, देखो और सुधार करो। जब तक न सफल हो, नींद चैन से त्यागो तुम, संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम। कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती। डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है, जा जाकर खाली हाथ लौट आता है। मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में। मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

नाम – वैष्णवी सिंह सिसोदिया
कक्षा – ७वी 'द'

ऐ मेरी प्यारी गुड़िया

ऐ मेरी प्यारी गुड़िया
जीवन से भरी, खुशियों की लड़ी
जब से आई तू, मेरे घर आँगन
मेरी किस्मत खुल गई
तेरे मासूम सवालों की लड़ी
तोतली जुबां से हर एक बोली
गुस्से में कहे या रूठ कर बोली
लगती सुमधुर गीतों से भली।

घर लौटते शाम थक कर चूर-चूर
साहब की डॉट से मन हुआ मजबूर
सुनकर मेरे दो पहिए की आवाज
भागी आती तू मेरे पास
तेरी पापा पापा की पुकार
हर लेती मन को मेरे।

सोचता हूँ जब तू बड़ी होगी
तेरी शादी लगन की घड़ी होगी
कैसे तुझको विदा करूँगा।
सहम जाता है ये दिल मेरा
क्यों ऐसी रीत बनी जग में
ऐ मेरी प्यारी सी गुड़िया।

नाम - आराधना भुरिया
कक्षा - ४थी 'स'

कौन?

अगर न होता चाँद, रात में
हमको दिशा दिखाता कौन?
अगर न होता सूरज, दिन को
सोने - सा चमकाता कौन?

अगर न होती निर्मल नदियाँ,
जग की प्यास बुझाता कौन?
अगर न होते पर्वत, मीठे
झरने भला बहाता कौन?

अगर न होते बादल, नभ में
इंद्र-धनुष रच पाता कौन?
अगर न होते हम तो बोलो
ये सब प्रश्न उठाता कौन?

नाम - गीतिका गीते
कक्षा - ३री 'स'

मेरा देश महान

मुझको मेरा देश पसंद है,
इसका हर सन्देश पसंद है।
इसकी मिट्टी में मुझको
आती सोंधी सी सुगंध है।
इसकी हर एक बात निराली,
इसकी हर सौगात निराली।
इसके वीरों की गाथा सुन,
आती एक नई उमंग है।
कितनी भाषा कितने लोग,
हर एक की एक नई है सोच।
संस्कृति सभ्यता भले हो भिन्न,
पर मिलते एकता के चिह्न।

जो गर देश पर आ जाये आंच,
एक होकर सब आते साथ।
मेरा देश है बड़ा महान,
ये है एक गुणों की खान।
देख ली हमने सारी दुनिया,
पर देखा न भारत जैसा।
इस मिट्टी में जनम लिया है
इसकी हवाओं की ठंडक से
सांसे पाती नया जनम है।

नाम - शिवम मारू
कक्षा - 7वीं 'ब'

पानी की बचत

प्रकृति ने हमें जीने के लिए बहुत सी अनमोल चीजें दी हैं। उनमें से एक है पानी। पानी बहुत से कामें में इस्तेमाल होता है, जैसे - पीने के लिए, सफाई के लिए, नहाने के लिए आदी। हमारी आधी दुनिया पानी से भरी है। पानी हमें गर्मी में ठंडक भी देता है तथा इसमें नहाने से बहुत ही आनंद आता है। हमे हमारे पानी की कदर करना चाहिए। हमारे शहरों में पानी की बहुत कमी है। पानी के लिए कभी-कभी लड़ाई भी होती है। पानी का ज्यादा होना भी परेशानी है तथा इसका कम होना भी परेशानी है। ज्यादा बारिश होने पर बाढ़ आ जाती है, वहीं कम पानी होने पर अकाल और सुखा। बारिश का मौसम हमारे लिए एक तोहफा लाता है और वह है पानी, पर हम इस तोहफे को नापसंद कर देते हैं। पुराने जमाने में कुएँ होते थे, बारिश का पानी गुल्लक के पैसों की तरह वहाँ इकट्ठा हो जाता था, पर हमने हमारे इन कुओं को नाली का रूप दे दिया है। हमें हमारी इस गलती की सजा मिल रही है। तो दोस्तों हमें पानी की बचत करनी चाहिए, व्यर्थ नहीं करना चाहिए।

नाम - सलोनी पाटनकर
कक्षा - 7वीं 'ब'

गर्व से कहती हूँ एक नारी हूँ मैं

गर्व से कहती हूँ कि एक नारी हूँ मैं।
भारत की तकदीर और बेशकीमती जागीर हूँ मैं।
लक्ष्मीबाई और पद्मावती का रूप हूँ मैं।
सफलता की सुनहरी धूप हूँ मैं।
मैं ही गंगा, मैं ही यमुना, कन्याकुमारी हूँ मैं।
गर्व से कहती हूँ कि एक नारी हूँ मैं।
जिस राधा और मीरा की है दुनिया दीवानी।
भिन्न-भिन्न रूपों में देखता, मुझको संसार का हर प्राणी।
और जिस सरस्वती की पूजा से निर्मल होती है वाणी।
ऊस ॐ रूपी अक्षर की एक रूपधारी हूँ मैं।
गर्व से कहती हूँ कि एक नारी हूँ मैं।

नाम - वैभवी श्रीवास्तव
कक्षा - 2री 'द'

नाम - वैभवी श्रीवास्तव
कक्षा - 2री 'द

स्वच्छ भारत अभियान

2 अक्टूबर 2014 गाँधी जयंती के दिन भारत के प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत की। सन् 2019 में महात्मा गाँधीजी की 150वीं जयंती है। मोदीजी ने 2019 तक उनके स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करने की बात कही। परंतु वह स्वच्छ भारत का सपना किसी एक भारतीय का, किसी एक सरकार का नहीं। अगर देश के 125 करोड़ लोग मिलकर इसमें भाग लें तब ही महात्मा गाँधी का यह सपना पूरा हो सकता है। अगर सारे भारतवासी वह संकल्प लें, कि वो न तो गंदगी करेंगे न ही किसी को करने देंगे, तब यह स्वच्छ भारत अभियान संभव है। अगर देखा जाए तो भारत का हर व्यक्ति वर्ष में 100 घंटे योगदान करता है, तो यह संभव है कि भारत वर्ष 2019 तक स्वच्छ हो जाए।

''मैं नहीं तू, तू नहीं मैं, सदा ही करते तू-तू मैं-मैं
करो कभी कोई अच्छा काम, बढ़ाये जो भारत देश का नाम''

स्वच्छता ही है देश का सौन्दर्य जिसे लाना है हमारा कर्तव्य।

नाम - हिमानी चौधरी
कक्षा - 9वीं 'अ'

प्रकृति के संग जीवन

हरी-भरी वसुधा के ऊपर,
नीले गगन ने छाता ताना।
कल-कल करते नदियाँ झरने,
चले जा रहे गाते गाना।।

रंग-बिरंगी तितली देखो,
कोयल कूक रही है वन में।
शीतल, मंद, सुगंध हवा के,
झोंके मस्ती भरते मन में।।

हिम आच्छादित पर्वत देखो,
सीना तान गगनचुंबी है।
सागर की उत्ताल तरंगे,
भू के पैर पखार रही है।।

बदला दृश्य और अब देखो,
कॉक्रीट का जंगल है यह।
हरियाली सब हवा हो गई,
वायु प्रदूषित बड़ी भयावह।।

अंधा-धुंध वृक्ष कटने का,
करें विरोध तत्काल इसी क्षण।
हरी-भरी कर वसुंधरा को,
लौटें पुनः प्रकृति के संग।।

नाम - वृष्टि जैन
कक्षा - दूसरी 'अ'

एक कविता हर माँ के नाम

घुटनों से रेंगते-रेंगते,
जाने कब मैं खड़ा हूआ?

तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब मैं बड़ा हूआ?

काला टिका, दुध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है।

मैं ही मैं हूँ हर जगह,
प्यार ये तेरा कैसा है?

सीधा-साधा भोला-भाला
मैं ही सबसे अच्छा हूँ।

कितना भी हो जाऊँ बड़ा,
मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ।

नाम - गीतिका गीते
कक्षा - तीसरी 'स'

छोटी हो या बड़ी, बहन होनी चाहिए

बहन होनी चाहिए
छोटी हो या बड़ी,
शांत हो या मस्तीखोर
कैसी भी हो एक
बहन होनी चाहिए।

बड़ी हो तो मॉ-बाप से बचाने वाली,
छोटी हो तो हमारे पीछे छिपने वाली।
बड़ी हो तो चुपचाप हमारे पॉकेट में पैसे रखने वाली,
छोटी हो तो चुपचाप पैसे निकालने वाली।
छोटी-छोटी बातों पर लड़ने वाली,
एक बहन होनी चाहिए।

बड़ी हो तो गलती पर हमारे कान खींचने वाली,
छोटी हो तो अपनी गलती पर सॉरी भैया कहने वाली।
एक बहन होनी चाहिए।

खुद से ज्यादा हमें प्यार करने वाली
एक बहन होनी चाहिए।

नाम - रचित घोडसे
कक्षा - ७वीं 'द'

भाग्य

एक सेठजी थे। उनके पास काफी दौलत थी। सेठजी ने अपनी बेटी की शादी एक बड़े घर में की थी, परन्तु बेटी के भाग्य में सुख न होने के कारण उसका पति जुआरी, शराबी निकल गया जिससे सब धन समाप्त हो गया। बेटी की यह हालत देखकर सेठनी रोज सेठ से कहती कि आप दुनिया की मदद करते हो मगर अपनी बेटी परेशानी में होते हुए उसकी मदद क्यों नहीं करते हो? सेठजी ने कहा कि ''जब उनका भाग्य उदय होगा तो अपने आप सब मदद करने को तैयार हो जायेंगे.....''

एक दिन सेठजी घर से बाहर गये थे और उनका दामाद घर आया। सास ने दामाद का आदर-सत्कार किया और बेटी की मदद करने का विचार उसके मन में आया कि क्यों न लड्डूओं में अशर्फियॉ रख दी जाये। यह सोचकर सास ने लड्डूओं के बीच में अशर्फियॉ दबा कर रख दी और दामाद को टीका कर विदा करते समय पॉच किलो लड्डू, जिनमें अशर्फियॉ थी, दे दिये।

दामाद लड्डू लेकर घर से निकला और सोचा कि इतना वजन कौन लेकर जाए, क्यों न यहीं मिठाई की दुकान पर बेच दिये जाए और दामाद ने वह लड्डूओं का पैकेट मिठाई वाले को बेच दिया और पैसे जेब में डालकर चला गया। उधर सेठजी बाहर से आये तो उन्होंने सोचा कि घर के लिए मिठाई की दुकान से लड्डू लेता चलू और सेठजी ने दुकानदार से लड्डू मांगे। मिठाईवाले ने वही लड्डू का पैकेट सेठजी को वापस बेच दिया। सेठजी लड्डू लेकर घर आये और सेठनी ने जब लड्डूओं का वही पैकेट देखा तो लड्डूओं को फोड़कर अशर्फियॉ देख सेठनी ने माथा पीट लिया।

सेठनी ने सेठजी को दामाद के आने से लेकर जाने तक और लड्डूओं में अशर्फियॉ छुपाने की बात कह डाली। सेठजी बोले कि मैंने पहले ही समझाया था, अभी उनका भाग्य नहीं जागा है। देखो मोहरे न तो दामाद के भाग्य में थी और न ही मिठाई वाले के भाग्य में थी इसलिए कहते हैं कि भाग्य से ज्यादा और समय से पहले न किसी को कुछ मिला है न ही मिलेगा, ईश्वर जितना दें उसी में खुश रहना चाहिए।

नाम - हर्षिता सांवरिया
कक्षा - ९वीं 'स'

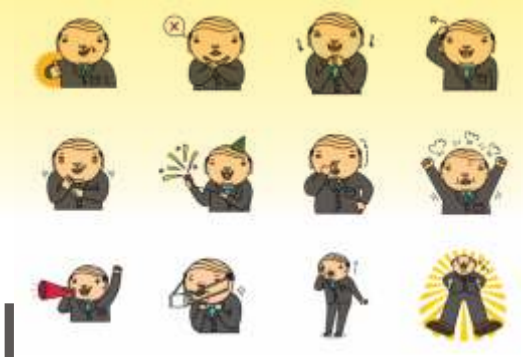

आखिर जिन्दगी क्या है?

आखिर जिन्दगी क्या है?
किताब की तरह पढ़ना है जिन्दगी

या गीत की तरह गाना है जिन्दगी
या नदी की तरह बहना है जिन्दगी
या दीये की तरह जलना है जिन्दगी
या पक्षियों की तरह उड़ना है जिन्दगी

आखिर ये जिन्दगी है क्या?
मैं बस इतना जानती हूँ कि
प्यार से सबको हँसाना है जिन्दगी।।

नाम - विदुषी टेमले
कक्षा - ८वीं 'ढ'

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ

आओ मिलकर पेड़ लगाएँ,
हरा भरा ये देश बनाएँ।
वातावरण को स्वस्थ बनाकर,
इस जीवन को स्वस्थ बनाएँ।
पेड़ न कोई कटने पाएँ,
जंगल अब ना घटने पाएँ।
मिलकर हम सब कसम खाएँ,
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ।
पेड़ है देते प्राण-वायु,
जीवन हो इनसे ही दीर्घायु।
खुद, समझे औरों को बताएँ,
आओ मिलकर पेड़ लगाएँ।

प्रदूषण

वतावरण को दूषित करके तुम,
स्वस्थ नहीं रह पाओगे।
स्वच्छ हवा ना ले पाए तो,
घुट-घुट कर मर जाओगे।
आओ मिलकर कसम ये खाएँ,
प्रदूषण को हम दूर भगाएँ।
गंदगी को दूर भगाकर ,
वातावरण को स्वच्छ बनाएँ।

नाम - मीत गवांडे
कक्षा - २री 'अ'

TEACHER'S DAY

A good teacher will give you a dream but a great one will instil necessary discipline in you to achieve it.

Children's Day

Children are the most important resource of a nation. It is our duty to nurture them and prepare them to become self-confident, honest and happy citizens of our country.

HAPPY
DAY

HAPPY

HAPPY
DAY

DAY

art attack day

Mother's DAY

Lume Pallotti | 2018-19 | 88

Green DAY

One father is more than
a hundred schoolmasters.

Happy Father's Day

FATHER'S DAY

Lume Pallotti | 2018-19 | 90

2019 DUSSEHRA Celebration

St. Vincent Pallotti School, Indore

DUSSEHRA

DUSSEHRA
CELEBRATION
2018-19

DUSSEHRA

Birthday *Celebration*

Lume Pallotti | 2018-19 | 93

Happy
Birthday

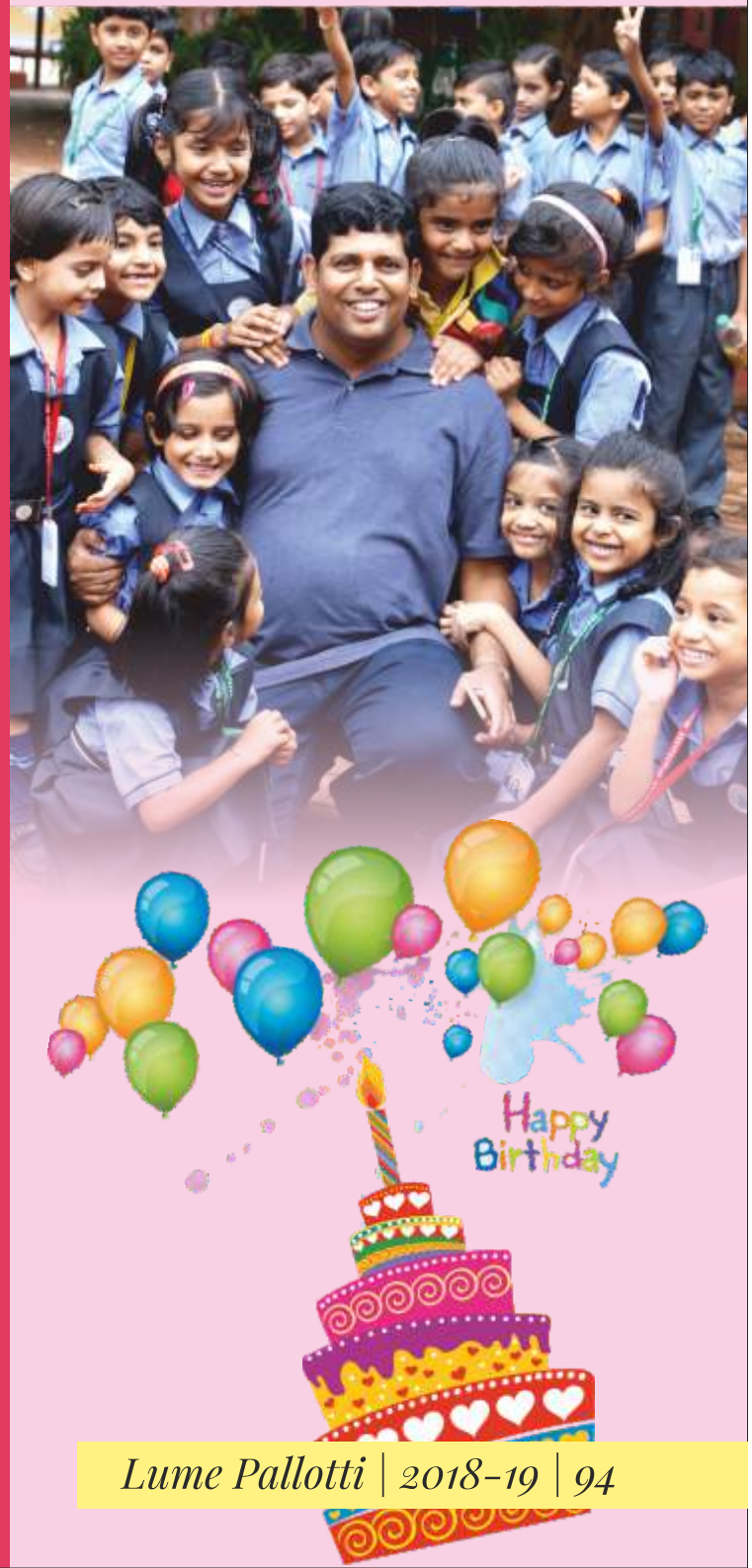
Happy
Birthday

CHRISTMAS
CELEBRATION

CHRISTMAS

2018-19

CHRISTMAS
CELEBRATION

CHRISTMAS
CELEBRATION
2018-19

Pallottine Family Day

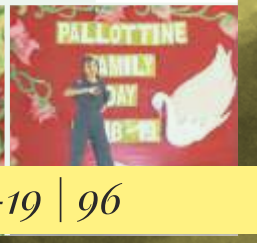

Kindergarten Graduation Ceremony

The Wisdom you seek is Already within you

Patron's Day

YOGA *Day*

SEMINAR

Seminar - Class Room Management

Interaction with the Provincial

Faculty Empowerment Program

Seminar - Teaching Slow Learners

Determination A Key To Success

A Seminar on Holding Ethics and Integrity

Measles-Rubella Vaccination Camp

Capacity Building Programme on Class Room Management

Pun & Fun

TEACHERS' literary club

ACADEMIC CLUB

।। श्री राजेन्द्रप्रसादः ।।

अस्माकं प्रथमः राष्ट्रपतिः श्री राजेन्द्रप्रसादः अपि बिहारस्य सारन जिलास्थाने जीरादेई नाम्नि ग्रामे ३ दिसंबर, १८८४ ईस्वी वर्षे अजायत। तस्य पिता महादेवायः माता च कमलेश्वरी देवी आस्ताम्। बाल्ये मातु रामायण-महाभारतस्य कथाः वारं-वारं श्रुत्वा बालकः राजेन्द्रः धर्मभीरुः नीतिमान् सदाचारे-परायणः च अभवत। १८९७ तमे वर्षे द्वादश वर्षीयस्य राजेन्द्रस्य विवाहः राजवंशीदेव्या सह अभवत।

बाल्यादेव राजेन्द्रस्य हृदये अध्ययनाय तीव्रा अभिलाषा आसीत। अष्टादशवर्षीयः राजेन्द्र प्रथमश्रेण्याम् 'एण्ट्रेंस' परीक्षाम् उत्तीर्णवान् प्रथमस्थानं च प्राप्तवान्। १९५० तमे वर्षे सः विधिशास्त्रस्य स्नातकोत्तरम् उपाधिम् प्राप्तवान् प्रथमं च आगत्य स्वर्णपदकम् अजयत। १९५० ईस्वीवर्षादाभ्य १९६२ वर्षपर्यन्तं श्री राजेन्द्रः स्वतन्त्रभारतस्य राष्ट्रपतिपदम् अलंकृतवान्। अयं लोकात्तरः महापुरुषः १९६३ ई २८ फरवरी - दिवसे गोलोक अगच्छत। सर्वकरेण सर्वोच्च - अलंकरेन 'भारतरत्नेन श्रीराजेन्द्रः सम्मानित।

नाम - निशा दहाके
कक्षा - ६वीं 'अ'

।। अस्माकंदेशः भारतवर्षः ।।

"स्वच्छः भारतः स्वस्थः भारतः"

भारतदेशः अस्माकं देशः अस्ति। अयम् विश्वस्य प्राचीनतमः देशः अस्ति। अयम् आर्याणां देशोऽस्ति। अयं पृथिव्याः स्वर्गः देवानां पुण्यभूमिः विश्वस्य शिरोमणि अपि कथ्यते। प्राचिनकाले दुष्यन्तः नामकः सुप्रतापी नृपः आसीत। तस्य पुत्रः भरतनाम्ना अस्य देशस्य नाम भारतः आसीत्। पर्वतराहिमालय अस्य उत्तरस्यां दिशि वत्ति गंगा यमुना सदृश्यो नद्यः स्वपावनेन जलेन अस्य देशस्य धरायाः सिञ्चन्ति।

अस्य पूर्वेदक्षिणे भागे सागरः भारतस्य चरणों प्रक्षालयति। अस्माकं देशे अनेकं धर्माः विविधाः सम्प्रदायाः अनेके उत्सवाः अनेके भाषाः च सन्ति। अस्याम् अनेक तायमपि एकतायाः समुधारा वहहति। यतो वयं सर्वे भारतीयाः स्मः।

स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत

नाम - अनिमेष गौड़
कक्षा - ८वीं 'ब'

।। संस्कृतम् ।।

संस्कृतम् जगतः एकतमा अति प्राचीना समृद्धा शास्त्रीया च भाषा वर्तते। संस्कृतं भारतस्य जगतः वा भाषास्वेकतमा प्राचीनतमा। संस्कृता वाक्, भारती, सुरभारती, अमरभारती, सुरवाणी, गीर्वाणवाणी, गीवीणी, देववाणी, देवभाषा, दैवीवाक, नामभिः एतम्दाषा प्रसिद्धा। भारतीय भाषासु बाहुल्येन संस्कृतशब्दाः उपयुक्ताः। संस्कृतान् एव अधिका भारतीय भाषा उद्भूर्ताः। तावदेव-भारत-युरोपीय-भाषावर्गीयाः अनेकाः भाषाः संस्कृतप्रभावः संस्कृतशब्द प्राचुर्य च प्रदर्शयन्ति।

व्याकरणेन सुसंस्कृता भाषा जनानां संस्कारप्रदायिनी भवति। अष्टाध्यायी इति नाम्नि महर्षिपाणिनेः विरचना जगतः सर्वसां भाषाणाम्।

व्याकरणग्रन्थेषु अन्तमया, वैयाकरणानां भाषाविंदा भाषाविज्ञानिनां च प्रेरणास्थानं इवास्ति। संस्कृतवांगमयं विश्रवांगमये अद्धितीयं स्थानम् अलंकरोति। संस्कृतस्य प्राचीनतमग्रन्थाः वेदाः सन्ति।

नाम - तनिष्क सोलंकी
कक्षा - ५वीं 'स'

।। गीता के श्लोक ।।

श्लोक - नैनं छिद्रन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
च चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुत।।

अर्थ - आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न आग उसे जला सकती है। न पानी उसे भिगो सकता है, न हवा उसे सुखा सकती है। (यहां भगवान श्रीकृष्ण ने आत्मा के अजर-अमर और शाश्वत होने की बात की है।)

श्लोक - हतो वा प्राप्यसि स्वर्गम्, जित्वा वा भोक्ष्यसे महिम्।
तस्मात् उत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः।।

अर्थ - यदि तुम युद्ध में वीरगति को प्राप्त होते हो तो तुम्हें स्वर्ग मिलेगा और यदि विजयी होते हो तो धरती का सुख को भोगोगे.....। इसलिए उठो, हे कौन्तेय और निश्चय करके युद्ध करो।

श्लोक - यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

अर्थ - हे भारत, जब-जब धर्म ग्लानि यानि उसका लोप होता है और अधर्म में वृद्धि होती है, तब-तब मैं धर्म के अभ्युत्थान के लिए स्वयम् की रचना करता हूं, अर्थात अवतार लेता हूं।

श्लोक - परित्राणय साधुनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे।।

अर्थ - सज्जन पुरूषों के कल्याण के लिए और दुष्कर्मियों के विनाश के लिए .... और धर्म की स्थापना के लिए मैं युगों-युगों से प्रत्येक युग में जन्म लेता आया हूं।

श्लोक - सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

अर्थ - सभी धर्मों को त्याग कर अर्थात हर आश्रय को त्याग कर केवल मेरी शरण में आओ, मैं तुम्हें सभी पापों से मुक्ति दिला दूंगा, इसलिए शोक मत करो।

नाम - प्लाक्षा वैद्य
कक्षा - ८वीं 'ब'

।। मेरा भारत महान ।।

भारतस्माकं प्रियदेशः। एषः देशः देशानां शिरोमणिः खलु। अस्य प्राकृतिकं सौन्दर्यं बलवत् मनः मोहयति। अस्य उत्तरस्यां दिशि पर्वतराजः हिमालयः विराजते। एषः पर्वत भारतस्य प्रहरी खलु। भारतस्य दक्षिणेन महासागरः अस्य चरण प्रक्षालयति। भारतवर्षे अनेकाः नद्यः प्रवहन्ति। एतासां तटेषु पवित्राणि नगराणि विराजन्ते। नद्यः लोकमातरः भवन्ति। भारतस्य हरितानि वनानि अस्य शोभां वर्धयन्ति। प्राचीनकाले अस्माकं देशः अन्यदेशानां गुरूः मन्यते स्म। अत्र नालंदा - तक्षशिला - नवद्वीपप्रमृतयः अनेके प्रख्याताः विश्वविद्यालयः आसन्। वैदेशिकाः उच्चशिक्षार्थं अत्रागत्य विद्यामर्जयन्ति स्म। अस्य महिमा अवर्णनीयः अस्ति। अस्य गौरवम् अतुलनीयम् अस्ति।

नाम - कीर्थना मधु
कक्षा - ७वीं 'स'

।। पर्यावरणरक्षकः ।।

अये प्रत्यूष। त्वम् एतत् पद्यं किमर्थं गायसि? मनीष! अद्यं अहम् अति प्रसन्नोऽस्मि यतः अहं पादपम् आरोप्य आगच्छामि। किं न जानासि अद्य पर्यावरणदिवसः अस्ति? आह! म्या कथं विस्मृतम्। अद्य तु जूनमासस्य पंचमी तारिका अस्ति। त्वं किम् अद्य तु सर्वैः जनैः वृक्षाः विस्मृताः। जीवनस्य आधारान् एतान् वृक्षान नराः निजस्वार्थेहितुः कृन्तन्ति। मानवैः सुखानि उपभोक्तुम् असंख्यानि साधनानि आविष्कृतानि। अस्मात् कारणात् ते प्रकृतेः पर्यावरणस्य व द्वयोः एव अवहेलनां कुर्वन्ति। त्वं सत्यं वदसि। वृक्षाः परोपकाराय एव फलन्ति। ते सर्वदा स्वयम् आतपे स्थित्वां आतपे अस्मभ्यं छायां यच्छन्ति। न केवलं छायाम् अपितु पुष्पाणि, फलानि, काष्ठानि, औषधानि गन्धं चापि, न जाने अन्यं किं किम्। सूर्यस्य प्रकाशे तरवः 'कार्बन-डाई-ऑक्साइड' नाम्नः वायोः अवशोषणं कुर्वन्ति अपि च ते ओषजनं (प्राणवायुम्) प्रदाय पर्यावरणं शुद्धं स्वस्थं च कृत्वा सन्तुलित कुर्वन्ति। शिक्षा - नमो नमः वृक्षदेवताभ्यः।

नाम - अंशिका वर्मा
कक्षा - ६टी 'अ'

।। कहानी -सिंहः च लोमशः ।।

एकः वनम् अस्ति। तत्र एकः सिंहः निवसति। सः अतीव क्रूरः। सः प्रतिदिनम् एकः मृगं खादति। एकदा तत्र एकः शृगालः आगच्छति। सः अतीव चतुरः। सः सिंहः पश्यति भीतः च भवति। सिंह शृगालस्य समीपम् आगच्छति। तं खादितुं तत्परः भवति। तदा शृगालः रोदनं करोति। सिंहः शृगालः पृच्छति। भवान् किमर्थं रोदनं करोति। शृगालः वदति - श्रीमन्। वने एकः अन्यः सिंहः अस्ति। सः मम पुत्रान् खादितवान्। अतः अहं रोदनं करोमि।। सिंहः पृच्छति - सः अन्यः सिंह कुत्र अस्ति। शृगालः वदति - समीपे एकः कूपः अस्ति। सः तत्र निवासं करोति। सिंह वदति - अहं तत्र गत्वा पश्यामि। तं सिंह मारयामि। शृगालः वदति - श्रीमन् आगच्छतु। सहम् दर्शयामि।

शृगालः सिंहः कूपस्य समीपं नयति। कूपजलं दर्शयति सिंहः तत्र स्वप्रतिबिम्बं पश्यति। सः कोपेन गर्जनं करोति। कूपात् प्रतिध्वनिः भवति। तम् अन्यः सिंहः इतिसः चिन्तयति। कुपितः सिंहः कूपे कूर्दनं करोति। सः तत्र एव मृतः भवति। एव शृगालः स्वचातुर्येण आत्मरक्षणं करोति।

नाम - शिवम पाण्डेय
कक्षा - ५वीं 'स'

।। मम विद्यालय ।।

अयं अस्माकं विद्यालयः अस्ति। अस्य भवनानि भव्यानि श्वेतवर्णनिय सन्ति। अस्य प्रधानाध्यापकः बहुज्ञः व्यवहार कुशलः छात्रप्रियः च अस्ति। अत्र विंशति अध्यापकाः सन्ति। एते सर्वे सुयोग्याः सन्ति। अत्र बहवः छात्राः सन्ति। छात्राः अनुशासन प्रियाः सन्ति। विद्यालयस्य क्रीड़ाप्रांगणम् सुविस्तृतम् हरित दूर्वाच्छिन्नम् च अस्ति। सायंकाले तत्र छात्राः क्रीडन्ति। अयं विद्यालयः अस्माकं गौरवास्पदम् अस्ति। अत्र प्रत्यष्दम समारोहः भवन्ति। देशस्य विशिष्टाः विद्वांसः नेतारः विविधकलाकुशलश्च आगच्छन्ति। अत्र छात्राणाम शारीरिक मानसिक बौद्धिकाध्यात्मिक योग्यताविकासाय अहनिशं प्रयतते।

नाम - जितिन थॉमस
कक्षा - ५वीं 'अ'